आपो हि ष्ठा मयोभुवः

जनवरी 2016

संरक्षक
राजदेव सिंह

मुख्य संपादक
डॉ. मनमोहन गोयल

परामर्शदाता
डॉ. जयवीर त्यागी
डॉ. सुधीर कुमार
डॉ. एस.डी. खोब्रागड़े
डॉ. एस.पी. राय

संपादक
डॉ. रमा मेहता

सह संपादक
प्रदीप कुमार उनियाल
पवन कुमार

प्रकाशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
जलविज्ञान भवन, रूड़की-247667
उत्तराखंड

मुद्रक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रूड़की के लिए
सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय विज्ञान
संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग,
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की की तकनीकी पत्रिका "जल चेतना" का जनवरी 2016 अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यन्त खुशी हो रही है। आशा है कि पिछले अंकों की ही तरह यह अंक भी सभी पाठकों एवं सुधीजनों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा। प्रायः यह सुनने में आता है कि विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में लिखना एक कठिन कार्य है परंतु यदि मन में अटूट विश्वास व लगन हो तो कोई कार्य कठिन नहीं होता। इसी का परिणाम है कि हमारा संस्थान पिछले 6 वर्ष से इस तकनीकी पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन कर रहा है। संस्थान का प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों से जुड़ी महत्वपूर्ण एवं जनोपयोगी जानकारियों को जनसाधारण तक पहुंचाया जाए जिससे समाज का हर वर्ग जल के क्षेत्र में हो रहे शोध कार्यों की नित नई जानकारियों का लाभ उठा सके। अभी तक संस्थान जल एवं जलविज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों की जानकारियों को सामान्यतया अंग्रेजी भाषा के माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाता रहा है। परंतु अब यह संस्थान जल चेतना पत्रिका के माध्यम से पिछले छः वर्षों से इन महत्वपूर्ण जानकारियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है। संस्थान ने प्रयास किया है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधित विषयों की जानकारियों के साथ-साथ जल चेतना में ऐसे लेखों को भी सम्मिलित किया जाए जिनका जनसाधारण के जीवन से कोई न कोई सरोकार अवश्य हो। यह ध्यान रखा गया है कि लेखों की भाषा सरल व सुबोध हो ताकि हर वर्ग के पाठक इन्हें आसानी से समझ सके।

प्रस्तुत अंक में पेरिस जलवायु समझौता, भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन से होगी कठिनाई, चुल्लू-भर रह गया साफ पानी, जल संचयन एवं प्रबन्धन से बदलेगी पर्वतीय राज्य उत्तराखंड की तस्वीर, परम्परागत कृषि से लघु उद्योग तक का सफर, मेरे गाँव की माटी और पेड़, वृक्ष की कहानी वृक्ष की जुबानी, खून बड़ा या पानी, नदियां रहती खुद ही प्यासी, पाठकों की प्रतिक्रियाएं, गंगा, जल संरक्षण हेतु वैज्ञानिक समझ और तकनीकी क्षमता, अब पछताए होत क्या? प्राचीन इन्जीनियरिंग का कमाल-चूना, सूर्खी एवं गुड़ से निर्मित गंगा कैनाल, उपयोगिता की कसौटी पर टिहरी जल-विद्युत परियोजना इत्यादि पर भी लेख शामिल किए गए हैं।

देश में जल की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से जुड़ी समस्याओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसका प्रमुख कारण जनसाधारण को जल के संबंध में पर्याप्त जानकारी का न होना है। अतः इस पत्रिका के माध्यम से जल से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारियों को जन सामान्य तक पहुंचाना ही हमारा परम उद्देश्य है ताकि आने वाले समय में पानी के दुरूपयोग को कम किया जा सके तथा इसकी निरन्तर गिरती हुई गुणवत्ता पर विराम लगाया जा सके। जन-जागरूकता अभियान एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह पत्रिका भारत सरकार की ओर से निःशुल्क वितरित की जा रही है। अतः जो भी सुधी पाठक इस पत्रिका को मंगवाना चाहते हैं वे इस पत्रिका के अंत में दिये गये सदस्यता फार्म को भरकर इसे सम्पादक के नाम पर भेजने का कष्ट करें ताकि उनका नाम सदस्यता सूची में शामिल किया जा सके और उन्हें यह पत्रिका नियमित रूप से भिजवाई जा सके।

सम्पादक मंडल उन समस्त विद्वत लेखकों का आभारी है जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक एवं उपयोगी लेख देकर हमारा उत्साहवर्धन किया है। जल चेतना के इस अंक में जिन स्रोतों से चित्रों का संकलन किया गया है, संपादक मंडल उन सभी का हार्दिक आभार प्रकट करता है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमें राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई.आर) नई दिल्ली के पदाधिकारियों ने भरपूर सहयोग प्रदान किया है, इसके लिये हम हृदय से उन सभी का आभार प्रकट करते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को अत्यंत रोचक तथा उपयोगी लगेगी। पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक बनाने तथा इसकी सामग्री एवं साज-सज्जा में सुधार लाने के लिए समस्त सुधी पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वे अपने विचारों एवं सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं। इसी प्रतीक्षा के साथ यह अंक प्रबुद्ध पाठकों को सादर प्रस्तुत।

जल चेतना

मूल्य : निःशुल्क
शिकायत : 01332-249228, 249201
ई-मेल : jalchetna44@gmail.com

सम्पादकीय : 01332-249262, 249228,
फैक्स : 01332-272123
ई-मेल : jalchetna44@gmail.com
वेब साइट : www.@nih.ernet.in

© राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
पत्रिका में प्रकाशित आलेख एवं रचनाओं में प्रस्तुत तथ्य लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल एवं संस्थान का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद रूड़की न्यायालय द्वारा ही निपटाए जायेंगे।